Unnati International Journal of Multidisciplinary Scientific Research, U.I.J.M.S.R.
Peer Reviewed - Refereed Journal & Impact Factor - 4.8, Open Access, Double Blind, Monthly Online Journal
ISSN : 2581-8872, Vol. : 3, No. : 6, July - 2021
2021

रचनात्मक संघर्ष और कवियों की कविता विषयक स्थापनाएं

डॉ मलकीयत सिंह
सहायक प्रोफेसर, राजकीय महाविद्यालय, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश

भाव, बुद्धि, कल्पना और शैली के संयुक्त तत्वाधान में शब्द रूप में लयबद्ध होकर प्रस्तुत होने वाली रचना कविता कहलाती है। कविता अपना अर्थ अपनी शर्तों पर देती है कविता अखबार की तरह सीधे-सीधे समझ में आने वाली घटना नहीं है । कविता अवचेतन मन के साधारणीकरण से उपजे हुए आनंद का स्वरूप है।

विभिन्न कवियों ने कविता के विषय में कविताएं लिखी हैं। हिंदी के विद्वानों ने अपनी रचनाओं में काव्य हेतु और प्रयोजनों पर बात की है लेकिन इन सब में समकालीन हिंदी कविता के कवियों द्वारा कविता विषयक कविताएं बहुत ही रुचिकर एवं नवीन दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करती हुई प्रतीत होती है अज्ञेय की कविता 'शब्द' देखिए:

किसी को शब्द हैं कंकड़
कूट लो, पीस लो, छान लो, डिबियों में डाल दो
थोड़ी-सी सुगन्ध दे के, कभी किसी मेले के रेले में
कुंकुम के नाम पर निकाल दो।

किसी को शब्द हैं सीपियाँ :
लाखों का उलट-फेर, कभी एक मोती मिल जाएगा :
दूसरे सराहेंगे-डाह भी करेंगे कोई
पारखी स्वयं को मान पाएगा।

किसी को शब्द हैं नैवेद्य।
थोड़ा-सा प्रसादवत्, मुदित, विभोर वह पाता है।
उसी में कृतार्थ, धन्य, सभी को लुटाता है
अपना हृदय
वह प्रेममय।'1शब्द / अज्ञेय
अज्ञेय » इन्द्र-धनु रौंदे हुए थे »

सुदामा पांडेय धूमिल की कविता संबंधी यहां पर विशेष उल्लेखनीय है वास्तव में साठोत्तरी कविता के कवियों में ऐसे पहले कवि हैं जिन्होंने सबसे अधिक कविताएं कविता के बारे में लिखीं। वे बात का प्रमाण हैं कि धूमिल कविता के भविष्य कविता की सार्थकता को लेकर चिंतित थे ।

धूमिल के लिए कविता पहले एक 'सार्थक वक्तव्य '2 होती है उनकी कविता कोरे भावोच्छवास की कविता नहीं अपितु बत्ह तराशी हुई व्यापक संदर्भों और प्रसंगों को अपने में समेटे हुए 'भाषा में आदमी होने की तमीज ' है ।

धूमिल कविता को आम आदमी तक पहुंचाना चाहते थे वह कहते थे एक बनिया हरे रंग की चाय बनाता है और दुकानों के जरिए लोगों तक पहुंचा देता है हरे लेबल की चाय ।वह जीरो साबुन बनाता है और सुबह हम पाते हैं कि वह लोगों की बनियान पर चल रही है। लेकिन कविता लिखी और वह जहां की तरह जाती है। कविता को आम आदमी तक पहुंचाए बिना कुछ नहीं हो सकता।'3
वे मानते थे कि :
यदि कभी कहीं कुछ कर सकती
तो कविता ही कर सकती है

काशीनाथ सिंह ने अपनी पुस्तक 'आलोचना भी रचना है ' में लिखा है ,धूमिल कविताएं नहीं पंक्तियां लिखता था ।उसकी जेब में हमेशा कागज और कलम होती थी अगर नहीं, तो जरूरत पड़ने पर सड़क से गिरा हुआ कोई टुकड़ा उठा लेता था अखबार का कोना फाड़ लेता था। वह हर जगह बेशक बेहद चौकस रहता था। आंख और कान खोल कर सड़क, चाहे ,घर ,दुकान, पार्क सिनेमाघर ,कचहरी हर जगह उसे जो भी मतलब की चीज दिखाई पड़ती जो भी काम का जुमला उसके कान में पड़ता नोट कर लेता। धूमिल ढेर सारे कवियों की तरह ट्रांस हार्बर चेतन की स्थिति में कविताएं नहीं लिखा करता था ।कविता उसके लिए कोई रहस्यात्मक या नितांत व्यक्तिगत संघर्ष नहीं थी अपनी दस-पांच पंक्तियों के साथ सड़क पर निकल आता था और लोगों से बातचीत के दौरान कभी ज्यों की त्यों कभी गद्यांतर के रूप में बोलता और प्रतिक्रिया देखना चाहता था फिर वह बहस

करता अपने को साफ करता और इस बीच मिलने वाले सुझाव और प्रतिक्रियाओं को अपने दिमाग में बिठाता जाता और यह सिलसिला तब तक जारी रखता जब तक कविता पूरी नहीं हो जाती। शब्दों के प्रयोग स्टीक मुहावरे सही और अनिवार्य तक सार्थक वाक्य विन्यास पर इतनी मेहनत करने वाला दूसरा आदमी मैंने नहीं देखा ।'4

धूमिल कथ्य के साथ शिल्प के प्रति भी उतने ही सजग थे उनके लिए एक सही कविता पहले एक 'सार्थक वक्तव्य होती है ।कहा जा सकता है:

छायावाद के कवि शब्दों को तोड़कर रखते थे
प्रयोगवाद के कवि शब्दों को टटोल कर रखते थे नई कविता के कवि शब्दों को गोल करके रखते थे
सन साठ के बाद कभी शब्दों को खोल कर रखते हैं

धूमिल कहते थे कवि एक कुनबे का अगुआ है जिसके सदस्य आजादी को आक्रमण की तरह झेल रहे हैं।

धूमिल कविता को' नाशक नहीं, अपितु सर्जक' मानते थे: वे कहते हैं:

कवि हो/ इस फौरी धावे में साथ दो और सुनो !
कविता मारती नहीं
जान बचाने की कोशिश में
पहल करती है'5

धूमिल के लिए कविता 'भाषा में आदमी होने की तमीज है 'वे कहते हैं

कवि एक लए है
थकान में गिरी हुई
क्या तुमने सुना?
और तुम्हें खुशी है
मगर मत भूलो
कि कवि व्यवहारिकता की बची हुई रस्सी से
झूलती हुई
संवेदना की खुदकुशी है।'6

धूमिल के अनुसार इंसानियत की भावना से सराबोर सुबह का व्यवस्था और तंत्र से लड़ता हुआ उसके विरुद्ध आवाज उठाता हुआ कवि लगातार रचनात्मक संघर्ष से गुजरता है। बीमारी के दिनों लगभग बेहोशी की हालत में उन्होंने अस्पताल के बेड पर एक कविता लिखी थी:

शब्द किस तरह कविता बनते हैं
इसे देखो
अक्षरों के बीच गिरे हुए
आदमी को पढ़ो
क्या तुमने सुना कि
यह लोहे की आवाज है या
मिट्टी में गिरे हुए खून का रंग
लोहे का स्वाद लोहार से मत पूछो
उस घोड़े से पूछो,
जिसके मुंह में लगाम है।'7

कविता और कवि गोष्ठियों के नाम पर गुटबंदियों और उनके पीछे छिपे चेहरों को बेनकाब करते हुए धूमिल ने व्यंग्य करते हुए कहा:

नगर के मुख्य चौराहे पर
शोक प्रस्ताव पारित हुए
हिजड़ों ने भाषण दिए लिंग बोधपर
वेश्याओं ने कविताएं पढ़ी आत्म शोध पर '7

धूमिल के लिए कविता आदमी आम आदमी की पीड़ा को पानी देने वाली ,निहत्थे को हथियार देने वाली सच्ची प्रतिबद्ध कविता है ।जिसने भाषा को अभीजात्यपन के दुर्ग से बाहर निकालकर साधारण जनता में स्थापित किया ।

उन्होंने कहा

मेरे शब्द उसे जिंदगी के कई स्तरों पर खुद को फिटपुनरीक्षण का अवसर देते हैं वह बीते हुए वर्षों
को एक-एक कर खोलता है
वर्तमान को और पारदर्शी पाता है उसके आरपार
देखता है ।और इस तरह अकेला आदमी भी
अनेक कालों और अनेक संबंधों में एक समूह
में बदल जाता है ।मेरी कविता इस तरह अकेले को सामूहिकता देती है और समूह को साहसिकता।'7

सहती को तरीका दस्तावेज के अंक 17 में प्रकाशित रमेशचन्द्रशाह की कविता 'बाल्मीकि की याद में', देखिए:

कविता मानव और
हृदय के शाश्वत सम्बन्ध को अभिव्यक्त करती है ।
कविता मानव हृदय का

सपन्दन है, समाज की अभिव्यक्ति है -
कवि, तुम निश्चय ही पहाड़ हो
निकल रही है कविता यह जो
तुम्हें फोड़कर / सागर समझ रहा है
उड़ती - उड़ती / समझ उसी की /
तुम पर बरस रही है ।' 9

इसी अंक में जितेन्द्र कुमार की रिपोर्ताज शैली में 'अंडेमान कविताएं' सुन्दर बन पड़ी हैं । कविता जहाँ अन्तर्जगत और बहिर्जगत की सशक्त अभिव्यक्ति है वहां बहुत कुछ अनकहा रह जाता है, इसी अनकहे को बयान करती हुई रवीन्द्र भारती की पंक्तियाँ
द्रष्टव्य हैं -
इतने दिनों बाद तुम जब मिली हो
एक कलम की जगह बनाती हुई
तब भी छिपी रह गई अंतरंगता
छिपी रह गई : एक आदत
छिपा रह गया : एक दुःख
स्मृतियों की घनघोर बारिश में
छिपी रह गई अंतर्कथा की एक रेल ।'10

कवि इसी अनकहे को समेटने के प्रयत्न में शब्द सागर गोता लगाता है ।

लेकिन हर बार यह गहराई बढ़ती जाती है । पीड़ा का सारांश शब्दों में एकदम कैसे आ सकता है । राजकुमार कुम्भज की पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं:
कितनी बार लिख सकता है कवि / एक कविता
वह एक कविता
जिसके भीतर पीड़ा का सारांश
सिमट आए ।'11

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी आधुनिक कविता के जाने-माने कवि हैं । इनकी कविताओं में 'बेहतर दुनिया का सपना' है । संवेदनहीन हृदयों को संवेदना का सपंदन देने की क्षमता है, आम आदमी की पीड़ा है तथा बेहतर समाज का सुन्दर सपना है ।अंक 26 में प्रकाशित इनकी सात कविताएँ महत्त्वपूर्ण हैं । 'बेहतर दुनिया के लिए' शीर्षक से कविता में भविष्य के सुन्दर समाज का स्वप्न है कवि को पूर्ण विश्वास है कि:
एक दिन यह दुनिया बदलेगी, किरणें निकलेंगी, करुणा बहेगी ।
कवि का मानना है कि
अपराध और आतंक चाहे दुनिया को सीमित और कुंठित और उथला बना लें कविता
की नमी उसे हमेशा संवेदना के लिए उर्वर बनाए रखेगी।
पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं -
जो लिखते हैं कविताएँ
और करते हैं प्रेम
वो धरती को थोड़ा और चौड़ा करते हैं
थोड़ा और गहरा
थोड़ा और नम । '12

कविता और प्यार द्वारा दुनिया का दायरा बढ़ाने वालों को सच्चे हृदय से कवि नमस्कार करते हैं । कवि के लिए हर मेहनतकश व्यक्ति वंदनीय है । पंक्तियाँ द्रष्टव्य
आप जो भी पढ़ रहे हैं
या सुन रहे हैं मेरी कविताएँ
इस वक्त / आप जो भी सींच रहे हैं
धान के खेत
या कर रहे हैं ढीले पुर्जे
आप जो भी जगे-सोचे देख रहे हैं।
बेहतर दुनिया के सपने
सबको नमस्कार ।'13

कवि का दुनिया को सुन्दर बनाने का सपना प्रस्तुत करती हुई ये पंक्तियाँ
द्रष्टव्य हैं -
जिस दुनिया में लिखी जाएगी
बेहतर कविताएँ
वही होगी बेहतर दुनिया
शब्द और अर्थ नहीं है कविता
सबसे सुन्दर सपना है
सबसे अच्छे आदमी का ।'14

अधिकतर विद्वानों का मानना है कि कविता सायास नहीं होती । यह तो अवचेतन मन की उपज है । कविता में प्रयास सृजन को बोझिल बना देता है । लेकिन कविता का रचनात्मक संघर्ष इतना भी साधारण नहीं होता कि पीड़ा याद ही न रहे ।

अंक 27 में संकलित पदमनाभन की पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं :
मैं कहना चाहता हूँ कविता
निष्कासित निष्कर्षों , स्थगित खेलों
टाली गई तिथियों से बनी
सपनों की कसकती दुनिया बचाती
शर्त है अंतिम ।
एक समर्थ कवि के लिए
भीतरी संघर्ष को कलमबद्ध करना ही सृजन'15

कविता और कलम ही कवि के हथियार हैं । इसी से वह व्यावहारिक लड़ाई लड़ता है ।इसी से आदिम समाज के ढांचे गढ़ता है । एक समर्थ कवि के मन में मानवता और सम्वेदना का भाव होता है । इसके बिना यह मानव समाज अधूरा है । आज की दुनिया का विस्तार बिना सम्वेदना और प्रेम के कवि को अधूरा लगता है । अंक 28 में संकलित श्रीवास्तव की ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं -
इतनी बड़ी दुनिया में
कहीं नहीं है कोई
सुरक्षित जगह जहाँ मैं रख सकूं / अपने सपने
और मेरा बच्चा/अपनी नन्हीं गेंद '16

अंक 34 में कुमार अम्बुज की कविता 'बहुत जरूरी है बच्चे के लिए' ग्रामीण सम्वेदना पर आधारित है। जहाँ पर बैलगाड़ी के टूटे हुए पहिए हैं, मछली पकड़ते बच्चे हैं, ढोलक की थाप है, गोबर की होली है, पिसी हुई जवार की रोटियाँ हैं ... गेहूँ और कपास का निकलना है । एक ही बैठक में चौबीस रोटियाँ खाने वाला किसान है कवि के अनुसार एक बच्चे को इन चीजों से परिचय करवाना जरूरी है । यद्यपि सब कुछ दूर होता जा रहा है पंक्तियाँ द्रष्टव्य है :
शहर जाने वाली बैलगाड़ी में
गांव को एक याद बनाने के लिए /
अब मिट्टी की बात करना /
किस कदर बेमानी है/मगर बहुत जरूरी है
आज भी जीने के लिए / एक नदी एक कविता
और / एक गांव की याद ' 17

कविता समाज की अभिव्यक्ति है । यह युग से उपजती है और युग को संचालित भी करती है । वर्तमान युग में कविता की सार्थकता की चिंता जायज़ है क्योंकि इस यांत्रिक युग में जहाँ मनोरंजन व संदेश के सस्ते साधन उपलब्ध हैं वहाँ काव्य का मानसिक संघर्ष उठाने को सहृदय तैयार नहीं । अंक 38 में कवि ज्ञानेन्द्रपति इसी बात को उद्धृत करते हुए टी0वी0 युग की कविता और कवि पर चिंता व्यक्त करते हैं:

टी०वी० युग के कवि / फोटोजेनिक होंगे / उनके पास फासफोरस हो न हो/अरे ! जिन्होंने बचा रखी होगी थोड़ी में/ गंधक अपने हृदय में/थोड़ा तेजाब अपने खून में सामूहिक चुप्पी के स्तब्ध क्षणों में जिनके भीतर / एक टाईम बम की तरह टिक-टिक करने लगती होगी कोई कविता ।'18

कवि का मानना है कि एक सामूहिक चुप्पी के भीतर भी कविता लगातार चलती रहेगी । उसको उसी हृदय में सुरक्षित गंधक प्रदान करेगी । कवि आगे एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न के जरिए कविता के जिन्दा रहने की वकालत करता है -
चितवनी जनता चेतेगी कैसे
चितचुराऊ प्रोग्रामों में '19

इसी तरह इनकी अन्य कविताएँ, टेलिविजन के प्रभाव को इंगित करती हैं जिसने अपरोक्ष रूप से मानव मस्तिष्क पर कब्जा कर रखा है । कविता कहीं समाप्त नहीं होती, कहीं रुकती नहीं । जब से मानव सभ्यता ने होश सम्भाला है तब से यह निरंतर गतिशील है । शब्द और अर्थ के बीच सत्य को छिपाए कविता उसकी रक्षा में लगी रहेगी ।
अंक 38 में संकलित अरुणेश नीरन की पंक्तियाँ देखिए
क्योंकि तुम कविता हो
और कविता कभी खत्म नहीं होती
कहीं भी समाप्त नहीं होती कविता
वह बहती है तुममें, बसंत में, वर्षा में
पीड़ा में, उल्लास में
काल की हर इकाई
आज कल और समूचे इतिहास में ।'20

अंक 40 में देवेन्द्र कुमार की लम्बी कविता 'जंगल का प्रजातंत्र' प्रकाशित हुई है । इसमें जंगल की सैर के माध्यम से हमारी व्यवस्था का चित्रण किया गया है ।

सभी प्राणियों का स्वभाव और मजबूरी यहाँ संपूर्णता के साथ चित्रित हैं। साथ ही जंगलों के कटाव प्राणियों के लुप्त होने की चिंता भी है । वैसे तो जंगल अपने आप में परिपूर्ण है पर उस पर मानवीय अतिक्रमण होने से 'जंगल को उसका जंगल होना ही खल रहा है ' कवि के अनुसार इन पशुओं, पक्षी और जंगल की रौनक के बगैर इन्सान जीवनसूना है । ये संदेशनुमा पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं -

"इन्हें बंदूकों से शूट करने के बजाय
कैमरे से 'शूट' करना ज्यादा बेहतर है
बेहतर है और राष्ट्रहित में ।"21

कवि की चिन्ता स्वाभाविक है कि यदि यह सब न रोका गया तो:

हो सकता है/देवालयों के, ये द्वारपाल /
राजदुर्गों के प्रहरी
कल को राज्यपाल बनाकर कहीं और न भेज
दिए जाएं ।'22

कविता का भाव जगत विस्तृत होता है । कभी भाव कई पन्नों का सफर तय कर जाता है कभी वह कुछ शब्दों में अपनी बात कह जाता है । 'लघु कविताएँ' इसीका ही एक उदाहरण हैं । अंक 42 में संकलित अब्दुलबिस्मिल्लाह की कविता इस तर्ज पर सुन्दर बन पड़ी है । कविता को अवचेतन मन की अभिव्यक्ति भी कहा गया है ।अवचेतन में जब कोई भाव अभिव्यक्ति के लिए तड़प उठता है तो जब तक उस भाव को जनम न दे दिया जाए वह भीतर ही भीतर सालता रहता है। मुक्तिबोध की तरह 'अंधेरे में' पकड़कर 'मौत की सजा' देता रहता है। इस भाव का बाहर आना कवि के लिए मानसिक प्रसव पीड़ा से कम नहीं । अंक 43 में संकलित अरुणेश नीरन की कविता, 'कविता वह क्या है? इसी अवचेतन सत्ता के प्रति उत्सुक्ता प्रकट करती है –वह क्या है।

जो कविता में उतरता है शब्द के जरिए
रच देता है।
अर्थ का जीवित और जागरूक संसार
अर्थ अंनत बन फैल जाता है ।'23

इस अर्थ का जगत के साथ अटूट सम्बन्ध होता है अभिप्राय है कि कविता मात्र कल्पना नहीं है । वह समाज से उत्पन्न होती है । किसी भाव का इस तरह घटना से जन्म लेना ही कविता है जो अभिव्यक्ति के लिए तरस उठे । वह चाहे बाल्मीकि का क्रौंच पक्षी के क्रन्दन से उपजा छंद हो या निराला का 'दुःखी निज भाई' देखना हो या पंत का 'वियोगी कवि' हो । अरुणेश नीरन ही पंक्तिया द्रष्टव्य हैं.

कविता में उतरने के लिए
जरूरी है चाहा हुआ न मिलना
धूप की मार
हवा के कोड़े पीठ पर सहते हुए
ऋतु की कांपती हथेली पर/पैदा होना
जरूरी है कविता में होने के लिए '24

कविता करते हुए कवि के चेतन और अवचेतन में भाव का यथार्थ वर्णन व शाश्वत रचना के लिए संघर्ष चलता रहता है वह ऐसा सच रच देना चाहता है जो सबका सच हो । अंक 55 में संकलित चमन लाल द्वारा अनुवादित पाश की कविता की पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं :

मैंने एक कविता लिखनी चाही थी... / उस कविता में / महकते हुए धनिए का जिक्र होना था / ईख की सरसराहट का जिक्र होना था/उस कविता में वृक्षों से बूंद-बूंद झरती ओस/ और बाल्टी में चोए दूध पर गाती /झाग का जिक्र होना था ।'25

सृजन प्रक्रिया या रचनात्मक संघर्ष कवि को एकांगी बनाता है । यह रचनात्मक संघर्ष उसे भीतर ही भीतर कचोटता है । जन्म लेने को आतुर भावों की निष्पत्ति प्रसव पीड़ा से कम नहीं । रचना क्षणिक अनुभूति की क्षणिक अभिव्यक्ति नहीं होती यह तो एक श्रृंखला होती है, भावों, विचारों, और शब्द सार्थकता की। अंक 48 में संकलित नरेंद्र मोहन की कविता भी सृजन की इसी एकाग्रता को प्रकट कर रही है -

सृजन क्या है मेरे लिए
एक कील सा गढ़ता
नाल सा दुखता
सांस की एकतानता
एक बिन्दु पर एकाग्र
ध्यान ढलता समाधि में
अर्थ की तलाश करता / अर्थ से परे गाता मन ।'26

एक कवि जनसाधारण से अधिक संवेदनशील

होता है । कवि के लिए पराया दुःख अपना बन जाता है । हो सकता है कि जो व्यक्ति यथार्थ परिस्थिति का सामना कर रहा है वह उसे इतनी तीव्रता से न ले लेकिन एक कवि उस सारे यथार्थ से सम्वेदना स्थापित करके उसे अनुभूत करता है और उसे भाषा देता है । ऐसे ही कविता जन-जन के बीच संवेदना स्थापित करती है । अंक 69 में संकलित विनय सौरभ की कविता 'काल का सबसे बड़ा प्रहार' में कवि कर्म के साथ जन-जुड़ाव का अपरोक्ष आह्वान है :

कब जाएगा वह समय
जब कवि की मौत पर एक आह
उसके पूरे शहर में फैली होगी
शहर के प्रत्येक चौराहे पर जुड़े होंगे लोग
और कहेंगे
संवेदना पर काल का
सबसे बड़ा प्रहार है यह '27

यही कवि पुनः घोषणा करता है कि समाज में सब कुछ उदास और शोक ही नहीं है अपित ऐसा भी बहुत कुछ है जो सुन्दर है, जो आशावान है, जहाँ खेत हैं, खड़ी फसलें हैं । इन सबके सौन्दर्य पक्ष को नजर अंदाज कर के कवि शोक गीत ही लिखे यह उचित नहीं । कम-से-कम उसे तो मंजूर नहीं।
कवि कहता है :

कवि हूँ उम्मीद भरे हैं मेरे विचार
मेरे पास जो दिमाग है और संवेदना
पास जो शब्द हैं मेरे
उससे नहीं लिखुंगा सिर्फ उदास कविताएँ
नहीं लिखुंगा सिर्फ शोक गीत ।'28

अंक 98 में प्रकाशित वंदना मिश्रा की कविताएँ, संशोधन, एकलव्य, अमानवीय आनंद, छोटे-छोटे संतोष, भाषा महत्त्वपूर्ण हैं। एक कविता द्रष्टव्य है.

मत करो
मेरी कविताओं में
संशोधन उन्हें यूं ही अनगढ़ रहने दो
आती रहने दो उनसे
मेरी सांसों की / खुशबू
हाथों की पकड़,
तुम्हारी हथौड़ी से मेरे शब्द डर जाएंगे
तुम मूर्ति को तो तराश दोगे
पर उसके प्राण मर जाएंगे
तुम्हारी कृत्रिमता के
सागर में मेरी
भोली भावना डूब जाएगी
मेरी सच्ची कल्पना
इन शब्दों के आडम्बर से ऊब जाएगी ।'29

रचनाकार कैसे रचना को जन्म देता है भाव किस प्रकार से शब्द बनते हैं ? अज्ञेय कहते हैं:

एक क्षण भर और
लम्बे सर्जना के क्षण कभी भी हो नहीं सकते!
बूँद स्वाती की भले हो
बेधती है मर्म सीपी का उसी निर्मम त्वरा से
वज्र जिससे फोड़ता चट्टान को
भले ही फिर व्यथा के तम में
बरस पर बरस बीतें
एक मुक्तारूप को पकते । '30

हालांकि सृजन सहज अनुभूतियों की सक्षम अभिव्यक्ति होता है तथापि दूसरों की रचनाओं का व्यैक्तिकरण जिसे हरिशंकर परसाई ने 'साहित्यिक चोरी' कहा है ,'मजमून चोरी' का है उसका प्रचलन भी बहुत है इस विषय पर महान कवि एवं चिंतक अज्ञेय ने कहा है:

नया कवि : आत्म-स्वीकार
किसी का सत्य था,
मैंने संदर्भ में जोड़ दिया ।
कोई मधुकोष काट लाया था,
मैंने निचोड़ लिया ।

किसी की उक्ति में गरिमा थी
मैंने उसे थोड़ा-सा संवार दिया,
किसी की संवेदना में आग का-सा ताप था
मैंने दूर हटते-हटते उसे धिक्कार दिया ।

कोई हुनरमन्द था:
मैंने देखा और कहा, 'यों!'
थका भारवाही पाया -
घुड़का या कोंच दिया, 'क्यों!'
किसी की पौध थी,

मैंने सींची और बढ़ने पर अपना ली।
किसी की लगाई लता थी,
मैंने दो बल्ली गाड़ उसी पर छवा ली ।

किसी की कली थी
मैंने अनदेखे में बीन ली,
किसी की बात थी
मैंने मुँह से छीन ली ।

यों मैं कवि हूँ, आधुनिक हूँ, नया हूँ:
काव्य-तत्त्व की खोज में कहाँ नहीं गया हूँ ?
चाहता हूँ आप मुझे
एक-एक शब्द पर सराहते हुए पढ़ें ।
पर प्रतिमा--अरे, वह तो
जैसी आप को रुचे आप स्वयं गढ़ें ।

कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि कविता विषयक कविताओं की वीथियों में विचरण सृजन और सर्जक के अंत:संबंध को बखूबी प्रस्तुत करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. **अज्ञेय/ शब्द ,इन्द्र-धनु रौंदे हुए थे ।**
2. **धूमिल, संसद से सड़क तक आमुखपृष्ठ**
3. **काशीनाथ सिंह आलोचना भी रचना है पृष्ठ** 18
4. **काशीनाथ सिंह आलोचना भी रचना है पृष्ठ** 28
5. **धूमिल, कल सुनना मुझे,पृ** 61
6. **धूमिल, कल सुनना मुझे,पृ** 63
7. **धूमिल, कल सुनना मुझे,पृ** 80
8.**धूमिल, कल सुनना मुझे,पृ** 29
9. **दस्तावेज़, जनवरी** 2003, **पृ०** 60
10. **दस्तावेज़, अक्तूबर** 1982, **पृ**0 3
11. **दस्तावेज़, अक्तूबर** 1982, **पृ**0 13
12 **दस्तावेज़, अक्तूबर** 1985, **पृ**0 42
13 **दस्तावेज़, अक्तूबर** 1985, **पृ**0 42
14. **वही, पृ**0 45 **।**
15.**दस्तावेज़, अप्रैल** 1975, **पृ**0 70
16. **दस्तावेज़, जनवरी** 1983, **पृ**0 38
17. **दस्तावेज़, जनवरी** 1987, **पृ**0 54
18. **दस्तावेज़, जनवरी** 1987, **पृ**0 -55
19 **वहीं, पृ** 55
20. **दस्तावेज़, जनवरी** 1988, **पृ**0 15
21. **दस्तावेज़, जुलाई** 1988, **पृ**0 68
22. **वही, पृष्ठ** 69
23. **दस्तावेज़, जनवरी** 1981, **पृ**0 61
24. **वही, पृ**0 64
25. **दस्तावेज़, जून** 1992, **पृ**0 3
26. **दस्तावेज़, सितम्बर** 1990, **पृ**0 66
27 **दस्तावेज, अंक** 69
28.**वही**
29.**दस्तावेज़, दिसम्बर** 1995, **पृ**0 72
30. **अज्ञेय, क्षण भर ,इन्द्र-धनु रौंदे हुए थे ।**